International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 02, February 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधुनिक मिथिला में पुनर्जागरण का सांस्कृतिक आयाम

आरती राज ,शोध छात्रा,इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय ,दरभंगा (बिहार)

डॉ बबिता कुमारी ,
सहायक प्राध्यापिका ,इतिहास विभाग ,एम के ऐस ,कॉलेज, चन्दौना ,दरभंगा ,बिहार

शोध सारांश

मिथिला प्राचीन काल से ही वैदिक आस्था का केन्द्र एवं विभिन्न देवी–देवताओं का पूजन स्थल रहा है। जनक–याज्ञवल्क्य के समय में मिथिला में वैदिक धर्म बहुसंख्यक लोगों की सांस्कृतिक आस्था का केन्द्र था, जहाँ विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा श्रद्धा के साथ की जाती थी। वैदिक धर्म सम्पूर्ण मिथिला में रच बस गया था। लेकिन वैदिक धर्म में व्याप्त आडंबर एवं संकीर्णता के कारण बौद्ध एवं जैन धर्म का उदय हुआ, जिसने न केवल मिथिला वरन सम्पूर्ण देश पर वैदिक धर्म के बढ़ते प्रभव को अवरूद्ध किया। कर्नाट–शासक रामसिंहदेव ने बौद्ध भिक्षु धर्मस्वामिन को मिथिला यात्रा के क्रम में अपना गुरू बनने का आग्रह किया, जो यह सिद्ध करता है कि कर्नाटकाल तक मिथिला में बौद्ध धर्म का प्रभाव था। जबकि जैन धर्म के सम्बन्ध में ऐसी कोई जानकारी नहीं मिलती है। वस्तुतः कर्नाट–ओइनवार काल में शैव, शाक्त, वैष्णव एवं तांत्रिक विचारधाराएँ काफी लोकप्रिय थीं। इनके अतिरिक्त गंगा, सूर्य, भैरव, हिमालय, स्कन्ध, कामदेव, पृथ्वी, धर्मराज, गणेश, इन्द्र, गौरी आदि की पूजा भी इस समय मिथिला में प्रचलित थी। परन्तु मिथिला में सर्वाधिक प्रचलित शैव मत ही था। शिव तथा शक्ति की अराधना और तांत्रिक मत एक प्रकार से मिथिला का लोकधर्म बन गया था। यही कारण है कि विद्यापति की महेशवाणी और नचारी कालजयी बन गईं। मिथिला के पर्व–त्योहारों से यहाँ के लोगों की अध्यात्मिक–धार्मिक आस्था का पता चलता है। वास्तव में मिथिला के सांस्कृतिक जीवन में बहुलता एवं विविधता थी लोग अनेक देवी–देवताओं की अराधना करते थे, भले ही शिव और शक्ति सर्वाधिक लोकप्रिय हो।

कूट शब्द – मिथिला , पुनर्जागरण , सांस्कृतिक , देवी–देवताओं , सांस्कृतिक , श्रावण , नागपंचमी ।

प्रस्तावना

मिथिला के पर्व–त्यौहार चण्डेश्वर के कृत्यरत्नाकर से मिथिला में प्रचलित सांस्कृतिक जीवन में पर्व–त्योहारों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है, जो पूरे वर्ष अत्यन्त ही श्रद्धा के साथ मनाए जाते थे। पर्व–त्योहारों का जहाँ एक ओर कृषि कर्म, फसल चक्र, मौसम और प्रकृति के साथ होनेवाले निरन्तर संवाद से गहरा सरोकार था, वहीं ये मिथिलावासियों की सांस्कृतिक आस्था एवं विश्वास से भी घनिष्टतया जुड़े थे। पर्व–त्योहारों का प्रारंभ सावन महिने से होता था, जो पूरे वर्ष भर चलता रहता था।

श्रावण : मिथिला में श्रावण का महिना पर्व–त्योहारों का माह कहा जाता है। शिवपूजा श्रावण माह का सबसे बड़ा धार्मिक उत्सव है, जहाँ लोग मन्दिर में जाकर महादेव की पूजा करते हैं तथा इच्छित वस्तुओं की कामना करते हैं। इसी महिना में अविवाहित लड़की अच्छे जीवन साथी प्राप्त करने के लिए विष्णु की पूजा किया करती हैं[1]। मिथिला में श्रावण माह में प्रत्येक सोमवार को महिलाएँ सोमवारी व्रत, जो कि महादेव का व्रत है, पूरे उल्लास के साथ मनाती हैं। मिथिला में तत्कालीन समय में विष्णु एवं शिव के अतिरिक्त भी अनेक देवी देवताओं की पूजा का प्रचलन था। श्रावण में भगवान बुद्ध की पूजा का प्रचलन भी था तथा बुद्ध द्वादशी के दिन बुद्ध भगवान की पूजा एवं व्रत मिथिलावासी किया करते थे[2]। श्रावण के पूर्णिमा के दिन बुद्ध की विशेष पूजा अर्चना की जाती थी। यही कारण है कि श्रावण की पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा कहा जाता है। सावन में महिलाएँ गृह वाटिका में झूला झूलती थीं और एक पर्व के रूप में राधा–कृष्ण की प्रतिमा झूला पर रखकर झूलाया जाता था। इसे झूलनोत्सव कहा जाता था, जिसमें रात के समय भजन कीर्तन एवं नाच–तमाशे का आयोजन किया जाता था। श्रावण महिने में मनाए जानेवाले कुछ प्रमुख त्योहार निम्नलिखित थे, जिन्हें आज भी लोग पूरी तत्परता से मनाते हैं–

1. **नागपंचमी** : नागपंचमी मिथिला में श्रावण महिना में प्रचलित एक प्रमुख त्योहार था[3]। नागपंचमी के दिन विषहारा की पूजा पूरे परिवार के लोग करते हैं। इस दिन पूरे घर को गाय गोबर से साफ किया जाता है तथा पायस और पुराने दही से तैयार घोरजाउर चढ़ाया जाता है, जिसे पातरि कहा जाता है। विषहारा को दूध और लावा का नैवेद्य लगातार 15 दिनों तक दिया जाता है। नागपंचमी के दिन घर में शाम के वक्त लावा छितराया जाता है, जो साँप के लिए होता है। मिथिला में ऐसी मान्यता प्रचलित है कि इससे साँप काटने का खतरा खत्म हो जाता है। नागपंचमी मौना पंचमी के नाम से भी जाना जाता है।

2. **मधुश्रावणी** : श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन मिथिला में मधुश्रावणी पर्व उत्साह के साथ मनाया जाता है[4]। मधुश्रावणी त्योहार मुख्य रूप से नवविवाहित महिलाओं का प्रमुख त्योहार है। इस त्योहार में नवविवाहिताएँ नागदेवाता की पूजा के साथ–साथ गौरी, नवग्रह, सूर्य और चन्द्रमा की पूजा चन्दन, फूल, सिन्दूर, धूप–दीप के साथ करती हैं।

मधुश्रावणी पूजा के अवसर पर महिलाएँ गौरी का गीत गाती हैं। श्रावण शुक्ल पंचमी से नवविवाहिताएँ लगातार 13 दिनों तक इस पूजा को करती हैं तथा अन्तिम दिन अकुरी, लावा, चूड़ा, आम, दही, केरा आदि नैवेद्य के साथ गौरी पूजा की जाती है।

3. **रक्षाबन्धन** : श्रावण शुक्लपक्ष के पूर्णिमा के दिन रक्षा–बन्धन का त्योहार मिथिला में उत्साह के साथ मनाया जाता है[5]। भाई–बहन का यह पवित्र त्योहार है, जिसमें बहन अपने भाई के दाएँ हाथों में रक्षा का बन्धन बांधती है। इस दिन भगवान, भगवती को राखी चढ़या जाता है।

भाद्र :

मिथिला में भाद्र का महिना पूजा–पाठ एवं पर्व–त्योहार के दृष्टिकोण से प्रशस्त है। इस माह अनेक पर्व–त्योहार मिथिला में मनाये जाते हैं, जो निम्न हैं–

1. **कृष्णाष्टमी** : भाद्रकृष्णपक्ष के अष्टमी के दिन कृष्णजन्मोत्सव पर्व सम्पूर्ण मिथिला में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है।[6] कृष्णाष्टमी के दिन लोग व्रत रखते हैं। मिथिला में इस दिन रात्रि जागरण की परम्परा प्रचलित है। कर्नाट–ओइनवार काल में भी कृष्णाष्टमी धूम–धाम से मनाया जाता था।

2. **कुशोत्पाटन** : भाद्रकृष्णपक्ष के अमावस्या के दिन मिथिला में कुशोत्पाटन किया जाता है[7]। मिथिला में वे सभी व्यकित कुशोत्पाटन करते है, जिनके पिता की मृत्यु हो गयी हो। कुश का सभी प्रमुख धार्मिक अवसरों पर उपयोग होता है। वर्ष में मात्र एक दिन कुशी अमावस्या के दिन ही कुशोत्पाटन किया जाता था।

3. **हरितालिका** : भाद्रशुक्लपक्ष के तृतीया के दिन मिथिला में हरितालिका सधवा महिलाओ ं का प्रमुख त्योहार है[8]। इस दिन महिलाएँ फलाहार एवं बिना नमक का भोजन करती हैं। इस दिन गौरी एवं महादेव की पूजा महिलाएँ किया करती हैं तथा महादेव के मन्दिर में जाकर श्रद्धापूर्वक पूजा–पाठ किया करती हैं।

4. **अन्नतचतुदर्शी** : मिथिला में भाद्रशुक्लपक्ष के चतुदर्शी के दिन अनन्तपूजा का प्रलचन है[9]। अनन्त लाल रंग के धागे से निर्मित होता है और इसे भगवान विष्णु के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। अनंत का निर्माण चौदह गाँठ देकर तैयार किया जाता है। चौदह गाँठ भगवान विष्णु के चौदह नाम का प्रतीक होता है । पूर्व मध्यकाल में चौदह प्रकार का प्रसाद विष्णु को अर्पित किया जाता था। सूत से निर्मित अनंत को पुरूष अपने दाँए बाँह पर तथा महिलाएँ बाए हाँथ पर धारण करती थीं।

5. **दुर्गापूजा** : मिथिला में भाद्र महिना में भी दुर्गा पूजा मनाया जाता था। दुर्गा पूजा के साथ–साथ जूलुस भी निकाला जाता था[10]। दुर्गा के रथ को विभिन्न प्रतीकों से सजाया जाता था। इन प्रतीकों में फूल, पत्तियाँ, झंडा, सिंह का प्रतीक, घंटी एवं अन्य वस्तुओं का प्रमुख स्थान था। दुर्गापूजा का यह समारोह चौदह दिनों तक चलता था[11]। इनके अतिरिक्त भी भाद्र महिना में अनेक पर्व–त्योहारों एवं पूजा–पाठ का प्रचलन कर्नाट–ओइनवार कालीन मिथिला में था। भाद्र में सूर्यपूजा, शिव पूजा, गणेशपूजा, इन्द्रपूजा, वरूण एवं वनस्पति पूजा आदि का प्रचलन मिथिला में था। शंकर भगवान एवं गणेश की पूजा मिथिला के लोग श्रद्धा के साथ किया करते थे[12]। इन्द्र पूजा कर्नाट–ओइनवार कालीन मिथिला में प्रचलित था जो आज भी उत्साह के साथ मनाया जाता है। ऐसी मान्यता प्रचलित है कि इन्द्र की पूजा करने से समय पर वर्षा होती है तथा कृषि कार्य सहज रूप से होता है।[13]

आश्विन : भादव की अपेक्षा आश्विन महिना अधिक पवित्र माना जाता था और कई विशिष्ट पर्व त्योहार इस महिने में भी मनाए जाते थे –

1. **पितृपक्ष एवं मातृनवमी**: मिथिला में पितृपक्ष का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। पितृपक्ष पन्द्रह दिनों तक चलता है। इसमें पुत्र अपने मृत्यु को प्राप्त पिता, पितामह एवं पूर्वजों को तिल–जल–कुश के द्वारा अर्पण करता है, जिसे तर्पण कहा जाता है। इस पक्ष के नवें दिन को मातृनवमी के नाम से जाना जाता है। उस दिन वे लोग जिनकी माँ की मृत्यु हो गई हो, ब्राहमण भोजन कराते थे।

2. **जीतिया** : अश्विन कृष्णपक्ष में जीमूत वाहन की पूजा की जाती थी जिसे जितिया पर्व के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जो महिलाएँ जीमूतवाहन का व्रत करती हैं, उन्हें कभी पुत्र शोक नहीं होता है। यह अत्यन्त ही कठिन व्रत होता है, जिसमें दो दिनों तक महिलाएँ व्रत करती हैं तथा तीसरे दिन ब्राह्मण भोजन के बाद पारण करती हैं।

3. **शारदीय नवरात्र** : आश्विन शुक्लपक्ष के प्रथम दिन से मिथिला में नवरात्र प्रारम्भ होता है। नवरात्र में दुर्गा की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर या प्रस्तर प्रतिमा की अथवा कुल देवता के घर में उनकी पूजा श्रद्धा और भक्ति के साथ की जाती है। नौ दिनों तक पूजा होती थी तथा दसवें दिन दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन कर दिया जाता था।

4. **कोजागरा** : आश्विन शुक्ल पक्ष के पूर्णिमा की रात अत्यन्त ही शुभ माना जाता था। इस दिन लक्ष्मी पूजा शाम में परिवार के समस्त सदस्यों की उपस्थिति में की जाती थी। इस अवसर पर मखान, मिसरी, पान और नारियल खाना आवश्यक होता था। कोजागरा की रात लोग रतजगा करते थे और कौड़ी खेलते हुए शरद पूर्णिमा की रात का आनन्द उठाते थे। आश्विन माह में मिथिला में स्कन्द, दुर्गा, सती, भद्रकाली, पद्मनाभ, लक्ष्मी, गणेश आदि देवी देवताओं

की पूजा भी प्रचलित थी। चण्डेश्वर के कृत्यरत्नाकर के अनुसार कर्नाट–ओइनवार काल में मिथिला में स्कन्द का जन्म दिवस मनाया जाता था [14] तथा श्रद्धा के साथ पूजा की जाती थी। सती पूजा का प्रचलन भी मिथिला में कर्नाट–ओइनवार काल में था [15]।

कार्तिक : मिथिला में कार्तिक माह का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। माघ एवं वैशाख जैसे पवित्र माह के समान ही कार्तिक माह का विशेष स्थान मिथिला में माना जाता रहा है। इस माह में बुर्जुग लोग पूरे माह पवित्र गंगा नदी के किनारे रहते हुए पूजा–अराधना में समय व्यतीत करते थे। कार्तिक महिने में प्रातः स्नान का विशेष महत्व था। ब्राह्म मुहुर्त में सूर्योदय से पूर्व लोग नियमित रूप से पोखरा या नदी में प्रतिदिन स्नान करने के बाद कथा का पारायण करते थे। कार्तिक महिने में अन्य निम्नलिखित महत्वपूर्ण त्योहार मनाए जाते थे–

1. **दीपावली** : मिथिला में कर्नाट–ओइनवार काल में दीपावली कार्तिक अमावस्या की रात मनाया जाता था, जो आज भी उसी रूप में मनाया जाता है [17]। प्रकाश का यह त्योहार पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता था। सूर्य अस्त होने के साथ–साथ घर को दीया–वत्ती से सजाया जाता था। दीपावली की रात लक्ष्मी पूजन का विशेष आयोजन होता था। कहीं–कहीं दीपावली की रात काली पूजा का भी प्रचलन था। आज भी मिथिला में दीपावली की रात दीपमालिका सजाने के अलावे लक्ष्मी तथा काली की पूजा होती है। काली पूजा में छागल का बलि प्रदान भी किया जाता था।

2. **हुराहुरी** : मिथिला में कार्तिक माह में पशुओं का त्योहार मनाया जाता था, जिसे हुराहुरी कहा जाता है। इस पर्व में पशुओं को स्नान कराया जाता था तथा सींग में तेल लगाया जाता था। पशुओं को नयी डोरी, जो लाल रंग में रंगी रहती थी, पहनाया जाता था। पशुओं के शरीर पर भी रंग लगाया जाता था। फिर पशुओं को स्वास्थ्यवर्द्धक पंथ तैयार कर पिलाया जाता था, जिसमें हल्का नशा भी होता था। पशुओं को विभिन्न प्रकार की पत्तियों से तैयार पेय पिलाकर बांस–बल्ले से बंधे सूअर के बच्चे को सींग से मारने के लिए ढ़ोल–ताशे बजाकर तथा उच्च स्वर में ललकारा देकर उकसाया जाता था। इसीलिए इस पर्व को सुकराती अथवा हुराहुरी कहा जाता था।

3. **भ्रातृ द्वितीया** : कार्तिक माह के शुक्लपक्ष में भ्रातृद्वितीया का त्योहार मिथिला में कर्नाट–ओइनवार काल में मनाया जाता था जो आज भी प्रचलित है। यह भाई–बहन का त्योहार है। इस त्योहार में बहन अपने भाई के लिए लम्बी उम्र की कामना करती है।

4. **देवोत्थान एकादशी** : कार्तिक माह के शुक्लपक्ष के एकादशी के दिन मिथिला में देवोत्थान एकादशी का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन लोग भगवान विष्णु का व्रत रखते हैं[18]। मिथिला में ऐसी मान्यता प्रचलित है कि इसी दिन भगवान विष्णु सोकर उठते हैं।

5. **सामा चकेवा** : कार्तिक शुल्कपक्ष में सामा चकेवा का पूजन किया जाता है। सामा चकेवा पर्व में बहन अपने भाई की लम्बी आयु की कामना करती है। मिट्टी का सामा–चकेवा बनाया जाता है तथा पूर्णिमा के दिन खेत में सामा–चकेवा को तोड़ा जाता है। इस प्रकार कार्तिक मास मिथिला में अत्यन्त ही पवित्र माना जाता है। कार्तिक मास को भगवान विष्णु का मास कहा जाता है।

6. **अग्रहण** : इस माह में मिथिला में गौरी पूजा एवं सूर्य पूजा किया जाता था[19]। मित्रसप्तमी के दिन सूर्य पूजा उत्साह के साथ किया जाता था। पूर्णिमा के दिन हिमपूजा का प्रचलन मिथिला में था। अग्रहण माह में श्रीगजानन चतुर्थीव्रत, विषहारापूजा, विवाहपंचमी आदि उत्सव उल्लसपूर्वक मनाया जाता था। नवान्न उत्सव मिथिला में मनाया जाता था। नए फसल तैयार होने के बाद नवान्न अनुष्ठानपूर्वक ग्रहण किया जाता है। पौष : इस माह में मिथिला में महादेवपूजा का प्रचलन था। पूर्णिमा के दिन सोम, वृहस्पति, पुरन्दर तथा विष्णु की पूजा की जाती थी। पर्व त्योहार के मामले में सबसे कमजोर पूस का ही महिना होता था।

माघ : लेकिन माघ महिना काफी पवित्र माना जाता था, जिसमें मनाए जानेवाले पर्व त्योहार इस प्रकार थे :–

1. **मकर संक्रान्ति** : मिथिला में माघ कृष्णपक्ष में तिलासंक्रान्ति का पर्व उत्साह के साथ मनाया जाता है। जिसे मकरसक्रान्ति के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन नए अन्न से भोजन बनाया जाता है [20]। इस दिन दान देने की परम्परा भी प्रचलित है। लोग वस्त्र तथा अन्न दान करते हैं।

2. **सरस्वती पूजा** : माघ मास में विद्या की देवी सरस्वती की पूजा श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मिथिला के लोग किया करते हैं[21]। पंचमी के दिन होने वाला यह त्योहार इस माह का महत्वपूर्ण त्योहार है। इस दिन को बसन्त पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। इसे सिरपंचमी भी कहा जाता था, जिसदिन किसान अपने खेतों की जुताई के शुभारंभ का अनुष्ठान करते थे।

3. **प्रातः स्नान** : कार्तिक महीने की तरह माघ माह में भी मिथिला में प्रातः स्नान की परम्परा रही है। सूर्य उदय से पूर्व लोग पवित्र नदियों अथवा पोखर में स्नान करते थे। पूर्णिमा के दिन श्रद्धालु गंगा स्नान करते थे। पूर्णिमा के दिन स्नान का विशेष महत्व है। माघी सप्तमी का भी विशेष महत्व है तथा उस दिन भी लोग सूर्य उदय से पूर्व पवित्र नदियों में स्नान करते थे।

4. **नरकनिवारण चतुर्दशी** : मिथिला में माघ कृष्णपक्ष में महादेव का व्रत किया जाता है, जिसे नरक निवारण के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व में पूरे दिन उपवास रखने के बाद रात में लोग भोजन करते थे।[22]

फाल्गुन : फाल्गुन महिना हंसी–खुशी और उल्लास का महिना माना जाता है। कर्नाट–ओइनवार काल में भी त्योहरों को मनाने का अन्दाज ही कुछ अलग था –

1 **महाशिवरात्रि** : फाल्गुन माह में महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन महादेव और गौरी का विवाह हुआ था। इस अवसर पर पूरे दिन लोग उपवास रखते हैं तथा महादेव की अराधना करते हैं। कुछ लोग मिट्टी से शिवलिंग बनाकर पूजा करते हैं। विभिन्न स्थानों में महादेव गौरी विवाह के अवसर पर नाच गाने तथा शिवस्तुति का कार्यक्रम होता है। पूर्व मध्यकाल में लोग पूरी रात जगकर शिव का भजन कीर्त्तन गाते थे।

2. होलिका दहन एवं होली : पूर्णिमा के दिन होलिकादहन किया जाता है तथा दूसरे दिन होली खेलते हैं। इसको संवत जलाना भी कहा जाता है जो प्रतीक है दुष्ट शक्तियों के नाश का। पूर्व मध्यकाल में होली के त्योहार को कहीं अधिक विशिष्ट माना जाता था, होलिका दहन के अलावे सप्ताडोरा का पर्व भी अत्यन्त ही श्रद्धापूर्वक लोग मनाते थे, हलांकि ये सभी होली पर्व के ही अंग थे।

चैत्र : चैत्र कृष्ण पक्ष के पहले दिन होली का उत्सव मनाया जाता है। सभी समुदाय के लोग होली में रंग बिरंगे वस्त्र पहनते हैं तथा रंग खेलते हैं। चैत्र अमावस्या के दिन इस संसार का निर्माण हुआ ऐसा लोग मानते हैं। चैत्र में मिथिला में ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव की पूजा बड़ी धूमधाम के साथ की जाती थी। भारतवर्ष को एक देवता के रूप में पूजा जाता था जो राष्ट्रीय एकीकरण के उच्च आदर्श से अनुप्राणित था, देवदास के सेनापति स्कन्द की पूजा चैत्र में ही किया जाता था। स्कन्द पूजा के अवसर पर दीपक, वस्त्र, गहना आदि का उपयोग किया जाता था[23]। इस पूजा का उद्देश्य बच्चों को बीमारियों से रक्षा करना था। चैत्र माह में सूर्य पूजा का भी विधान था [24], जिसकी पुष्टि अलबरूनी ने भी किया है। चण्डेश्वर के अनुसार चैत्र मास में शुक्ल एकादशी के दिन रूक्मिणी के सम्मान में पूजा की जाती थी[25]। मिथिला में कामदेव की पूजा को काममहोत्सव के रूप में मनाया जाता था[26]। चण्डेश्वर के अनुसार चैत्र अमावस्या के तीसरे–चौथे दिन झलमला नाम का त्योहार होता था। इस अवसर पर घास का सर्प बनाकर लकड़ी के सहारे बाँधकर रखा जाता था और लोग उसे छोटे–छोटे टुकड़ों में विभक्त कर वर्ष भर घर में रखते थे तथा पूजा करते थे[27]। इस माह में पृथ्वी पूजा का प्रचलन भी मिथिला में था जो मिथिला में कृषि के व्यापक प्रचलन का प्रमाण था। इसके अतिरिक्त इस महिने में नवरात्र दुर्गापूजा, छठ, रामनवमी, महावीर जन्मोत्सव, श्रीरेमन्तपूजा भी मिथिला में किया जाता था। वस्तुतः संख्या के लिहाज से सर्वाधिक पर्व–त्योहार चैत महिने में ही मनाए जाते थे।

वैशाख : चैत्र संक्रान्ति के दूसरे दिन मिथिला में जूड़–शीतल का त्योहार मनाया जाता था। इस दिन विभिन्न प्रकार का पकवान बनता था। भगवान–भगवती को भोग लगाया जाता था और लोग उसको ग्रहण करते थे। चण्डेश्वर के अनुसार मिथिला में वैशाख माह की शुरूआत इरा की पूजा के साथ होता था[28]। इस माह में विष्णु, शिव, गंगा, हिमालय की पूजा भी श्रद्धा के साथ किया जाता था[29]। विवाहिता महिलाएँ अक्षयतृतीया के दिन अखण्ड सौभाग्यवती बने रहने के लिए व्रत रखती थीं। मिथिला में सरकरासप्तमी के दिन सूर्य पूजा के साथ भगवान बुद्ध की पूजा की जाती थी। यह त्योहार 10 दिनों तक चलता था। वैशाख पूर्णिमा के दिन वासुदेव, धर्मराज की पूजा का प्रचलन था तथा तिल अर्पण किया जाता था[30]। इसके अतिरिक्त शीतला पूजा भी वैशाख माह में ही किया जाता था।

ज्येष्ठ : ज्येष्ठ अमावस्या के दिन वटसावित्री त्योहार मनाया जाता है, जिसमें महिलाएँ अपने पति के लम्बी आयु के लिए व्रत रखती हैं और वटवृक्ष की पूजा करती हैं। ज्येष्ठ में ही उमा का जन्मदिवस मनाया जाता था। सभी वर्ग की महिलाएँ उमा जन्मदिवास को मनाती थीं[31]। ज्येष्ठ के आठवें दिन मिथिला में शुक्लादेवी का जन्मोत्सव श्रद्धा के साथ मनाया जाता था। इस माह में गंगा की पूजा भी की जाती थी। ज्येष्ठशुक्ल का दसवां दिन गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता था[32]।

अषाढ़ : अषाढ़ माह में मिथिला में गणेश पूजा का प्रचलन था। गणेश को विघ्न–विनाशक एवं सर्वमनोरथपूर्ण करनेवाले देवता के रूप में मिथिला में पूजा जाता है। भगवान भास्कर एवं नवदुर्गा की पूजा भी अषाढ़ शुक्लपक्ष में किया जाता था। दुर्गा पूजा के अवसर पर कुमारी पूजन भी प्रचलित था[33]। इस प्रकार वर्ष भर मनाए जानेवाले पर्व–त्योहार मिथिलावासियों के धार्मिक आस्था के प्रतीक थे, जिनका गहरा सम्बन्ध उनके लौकिक जीवन से था। मिथिलावासी हर उस चीज को पूजते रहे हैं, हर उस देवी–देवता की अराधना करते रहे हैं, जो उनके लौकिक और पारलौकिक जीवन को सुखी सम्पन्न बना सके। वृक्ष, लताएँ, नदी, सरोवर, फूल, पत्तियाँ, अनाज, हल बैल आदि उनके पूजा के माध्यम थे, पानी और मिट्टी से देवी–देवता की मूर्तियाँ या प्रतीक भी बनते थे और यही अनुष्ठान के साधन भी थे, फिर पूजने के लिए भी असंख्य देवी–देवताओं की श्रृंखला थी।

वस्तुतः पर्व–त्योहार मिथिलावासियों के अध्यात्मिक और लौकिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थे, जिनके बीच यहाँ के लोगों ने अद्भुत सामंजस्य कायम किया था। वस्तुतः उनके लौकिक और अध्यात्मिक जीवन के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं

खींची जा सकती थी, जो वर्ष भर मनाए जानेवाले पर्व–त्योहारों से स्पष्ट होता है। मिथिला की धार्मिक स्थिति मिथिला समाज में कर्नाट–ओइनवार काल में विभिन्न धार्मिक मतों का प्रचलन था। शैव, शाक्त, वैष्णव, तंत्रवाद आदि यहाँ के लोकप्रिय धार्मिक मत थे। लेकिन धार्मिक मतों के आधार पर मिथिला में कोई विभेद नहीं था। मिथिला में प्रचलित पर्व त्योहारों से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मिथिलावासी सभी देवताओं की पूजा–अराधना समान श्रद्धा और भक्ति के साथ करते थे। वैदिक–अवैदिक, आत्मवादी–अनात्मवादी आदि विभिन्न एवं परस्पर विरोधी धार्मिक परम्पराएँ एक साथ विद्यमान थीं। धार्मिक समरसता एवं बहुलता मिथिला की खास विशेषता थी। परन्तु कर्नाट–ओइनवार काल में मिथिला में ब्राह्मणवादी धर्म का प्राबल्य था। हलांकि बौद्ध एवं शैव–शाक्त तंत्रवाद की जड़ें काफी गहरी हो चुकी थीं, लेकिन प्राचीन ब्रहमा, विष्णु एवं महेश जैसे त्रिदेव की परिकल्पना उस समय भी लोकप्रिय थी तथा सभी वर्ग के लोग इन तीनों देवों की पूजा सम्मिलित रूप से किया करते थे। धार्मिक जीवन की एक खासियत यह थी कि लोग अलग–अलग देवता की पूजा तो किया करते थे, परन्तु यह भी मानते थे कि सभी देवता एक ही हैं। विद्यापति ने अपने ग्रंथ गंगावाक्यवली में विष्णु एवं शिव को एक मानकर दोनों के एकात्मक रूप का वर्णन किया है[34]। शिव और शक्ति का सम्मिलन इसी काल में हुआ, जिससे त्रिदेव में शिव की शक्ति काफी बढ़ परन्तु ब्राह्मण धर्म के पुनर्जागरण तथा भक्ति आन्दोलन के प्रसार ने ओइनवार शासन काल तक आते–आते बौद्ध धर्म को मिथिला में पूरी तरह समाप्त कर दिया [35]। मिथिला समाज में अंधविश्वास और जादू–टोना का भी काफी प्रसार था। लोरिकाइन से ऐसे जादू–टोना जानने वाली डायन अथवा तांत्रिक महिलाओं की जानकारी मिलती है। इसके साथ ही भूत–प्रेत आदि पर भी लोगों को गहरा विश्वास था, जिन्हें साधने की चेष्टा ओझा–गुणी, या भगत किया करते थे। जाहिर है कि कृषिक समाज की सामान्य विशेषताएँ मिथिला में कायम थी और लोग पारलौकिक शक्तियों में गहरा विश्वास रखते थे। मिथिला में तीर्थयात्रा भी धार्मिक आस्था का प्रतीक था। लोग तीर्थयात्रा करना अपने जीवन का उद्देश्य मानते थे। गंगा, यमुना एवं सरस्वती के तट पर लोग पहुँचकर धार्मिक कर्म किया करते थे। इसके अतिरिक्त लोग काशी, अयोध्या, द्वारिका, हरिद्वार, प्रयाग आदि स्थानों की यात्रा करते थे [36]। मिथिला के लोग गया की यात्रा भी करते थे, जहाँ पूर्वजों की आत्मा को शांत रखने के लिए पिण्डदान करते थे। तीर्थयात्रा शुरू करने से पूर्व कुछ नियमों का पालन करने का विधान था। तीर्थयात्रा प्रारम्भ करने से एक दिन पूर्व एक समय ही भोजन किया जाता था तथा यात्रा के दिन व्रत रखा जाता था। गणेश, मातृका पूजा, नवग्रहपूजा एवं दृष्टदेवता की पूजाकर ब्राह्मण भोजन का विधान था [37]। इस प्रकार तीर्थ यात्रा को मिथिलावासियों ने महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। सूर्य एवं चन्द्रमा की अराधना भी कर्नाट–ओइनवार काल में की जाती थी। सूर्य को समर्पित छठ त्योहार आज भी मिथिला में श्रद्धा के साथ मनाया जाता है [38]। छठ के अवसर पर सुबह में उगते हुए सूर्य की एवं शाम में डूबते सूर्य की अराधना की जाती है। सूर्यपूजा के साथ ही मिथिला में चन्द्रमा की पूजा का भी विधान था। मिथिला में प्रचलित पर्व–त्योहारों में ''चौठ चन्द्र'' का भी महत्वपूर्ण स्थान है। चौठचन्द्र के दिन उगते चन्द्रमा का दर्शन लोग किया करते हैं तथा प्रसाद भी अर्पण करते हैं। मिथिला के लोग नीलकंठ पंक्षी की पूजा श्रद्धा के साथ किया करते थे। नीलकंठ पक्षी को नीलकंठ महादेव के रूप में पूजा जाता था। मिथिला में ऐसी मान्यता प्रचलित है कि यदि यात्रा के समय नीलकंठ पक्षी का दर्शन हो जाता है तो निश्चित रूप से जिस उद्देश्य से यात्रा की जाती है उस उद्देश्य की प्राप्ति हो जाती है। वस्तुतः अनुश्रुति, किंवदन्ती और मिथक मिथिला के लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा था। आस्था का स्थान अंधविश्वास ने ले लिया था और लोग अपने कौलिक एवं जातीय परम्पराओं का अनुपालन करने में काफी संकीर्ण थे, जिसमें चूक होने पर प्रायश्चित करते थे। मुस्लिम धर्म मिथिला में मुस्लिम धर्मावलम्बी लोग भी रहा करते थे। मुस्लिम लोगों के पर्व–त्योहार एवं रीति–रिवाज हिन्दुओं से पूर्ण रूप से भिन्न थे। समाज में मुस्लिम लोग भी अपने अराध्यदेव की पूजा करते थे तथा अनके पर्व–त्योहार मनाते थे। ''सबे–बारात'' मुस्लिम धर्मावलम्बियों का एक अन्य प्रमुख त्योहार था [39]। यह त्योहार आनन्दोत्सव का त्योहार था। श्रद्धा के साथ इस त्योहार को मनाया जाता था। मुहर्रम पर्व मुस्लमानो के द्वारा मनाया जाने वाला एक अन्य प्रमुख त्योहार था [40]। यह गम का त्योहार था, जो शियाओं का प्रमुख त्योहार माना जाता था। आज की तरह तजिया के साथ जुलूस निकाला जाता था। मुहर्रम के अवसर पर तजिया से सम्बन्धित अनेक लोकनृत्यों का प्रचलन मिथिला में था [41]। इसके अतिरिक्त भी अनेक पर्व–त्योहार मुसलमानों में प्रचलित थे। कर्नाट–ओइनवार काल में मुसलमान लोग बिना किसी प्रकार के प्रतिरोध के अपने ईश्वर की अराधना के लिए स्वतंत्र थे। राजा के द्वारा मुस्लिम समाज में किसी प्रकार का धार्मिक हस्तक्षेप नहीं किया जाता था, जिससे प्रमाणित होता है कि मिथिला के शासक धर्मनिरपेक्ष थे तथा सभी धर्मों को समान आदर तथा सम्मान प्रदान करते थे।

निष्कर्ष

इस प्रकार कर्नाट–ओइनवार काल में मिथिलावासियों का धार्मिक–अध्यात्मिक जीवन संश्लिष्ट किन्तु समरस एवं समन्वयवादी था। इस काल में धार्मिक संश्लेषण की प्रक्रिया काफी तेज थी, जिसके फलस्वरूप तंत्रवाद ने प्रायः सभी प्रकार के सामाजिक–धार्मिक विश्वासों एवं मतों को प्रभावित किया। मिथिला के धार्मिक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि लोग पंथ–विशेष के अनुशासन से बंधे नहीं थे। मिथिलावासियों के लिए जितने महत्वपूर्ण विष्णु थे, उतने ही शिव भी। मातृशक्ति तो सर्वत्र विद्यमान थी, चाहे वह कोई ब्राह्मण धार्मिक मत हो या फिर कोई बौद्ध धार्मिक पंथ। बौद्ध

तथा ब्राह्मण धर्म के बीच विवाद अब पुरानी बातें हो चुकी थीं। यह सामंजस्य और समन्वय का युग था, जिसने मिथिला में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अध्यात्मिक आधारभूमि तैयार की।

संदर्भ :–

1. चण्डेश्वर, कृत्यरत्नाकर, पृ0 251
2. उपर्युक्त, पृ0 247–48
3. जीवनन्द ठाकुर, मिथिला में प्रचलित कुल पर्व त्योहार, मिथिलामिहिर, मिथिलांक, पृ0 156
4. भेषनाथ झा, व्यवहार विज्ञान, पृ0 86–87
5. जीवानन्द ठाकुर, पूर्वोक्त, पृ0 156
6. चण्डेश्वर, कृत्यरत्नाकर, पृ0 257
7. जीवानन्द ठाकुर, पूर्वोक्त, पृ0 156
8. भेष नाथ झा, पूर्वोक्त, पृ0 127
9. उपर्युक्त, पृ0 145
10. चण्डेश्वर, पूर्वोक्त, पृ0 257–64
11. उपर्युक्त, पृ0 262
12. उपर्युक्त, पृ0 283–85
13. उपर्युक्त, पृ0 209
14. उपर्युक्त, पृ0 309
15. उपर्युक्त, पृ0 348
16. उपर्युक्त, पृ0 303–04
17. भेषनाथ झा, पूर्वोक्त, पृ0 189
18. चण्डेश्वर, पूर्वोक्त, पृ0 420–27
19. उपर्युक्त, पृ0 460–66
20. उपर्युक्त, पृ0 471–72
21. जीवानन्दठाकुर, पूर्वोक्त, पृ0 156
22. चण्डेश्वर, पूर्वोक्त, पृ0 520–21
23. उपर्युक्त, पृ0 119
24. उपर्युक्त, पृ0 121–23
25. उपर्युक्त, पृ0 128
26. Blochman's Aaini Akabari, III, p. 252
27. म0म0 गंगानथ झा, कविरहस्य, पृ0 10
28. हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि, पृ0 275
29. चण्डेश्वर, पूर्वोक्त, पृ0 301–25
30. R.K. Choudhary, Select Inseription of Bihar, p. 124
31. Journal of Bihar Research Society, Vol-9, p. 303-41
32. R.K. Choudhary, Mithila in the Age of Vidyapati, p. 325
33. Makhan Jha, Folik Lore, Magic and Legends of Mithila, p.
34. Grierson's Bihar Peasant life, P. 403
35. Abul Farul, III, (S.Jarrette & Sir Yadunath Sarkar), p. 233-3
36. V.Mishra, Cultural Heritage of Mithila, Allahabad, p. 339
37. Abul Fazal, Ain-I-Akabari, I, Bloch, p. 286-87
38. Manucci Storia, DP Mogal; II, p. 249
39. Abul Fazal, Akbarnama, III (Bev), p. 109
40. P.N. Ojha, Some Aspect of North Indian Social Life, Ist Edn. Patna 9796, p-84-85